IMPACT FACTOR (SJIF) 2021= 7.380 ISSN 2319-4766

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

APRIL - JUNE ,2022, VOL- 10, ISSUE-54

झारखंड के महानायक : वीर बुधु भगत

12th February, 2021

Organised by Itihas Sankalan Samiti, Jharkhand

आजादी के 75 वें वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित

Editor-in –Chief
RAJKUMAR, Ph. D
Assistant Professor,
University Department of History,
Ranchi University, Ranchi.

Scanned with OKEN Scanner

IMPACT FACTOR SJIF 2021 = 7.380
ONLINE ISSN 2278-8808 PRINTED ISSN 2319-4766

AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED & QUARTERLY

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

SPECIAL ISSUE OF आजादी के 75 वें वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित

झारखंड के महानायक : वीर बुधु भगत

Editor-In- Chief

RAJKUMAR, Ph. D.
Assistant Professor, University Department of History,
Ranchi University, Ranchi.

Editors

SMITA TIGGA
University Department of History,
Ranchi University, Ranchi.

BABITA KUMARI
University Department of History,
Ranchi University, Ranchi.

PANKAJ KUMAR
University Department of History, Dr.Shayma
Prasad mukherjee University, Ranchi.

SHRI. GOPAL KUMAR SAHU
University Department of History, Ranchi
University,Ranchi.

SANJAY KUMAR
University Department of History, Ranchi
University,Ranchi.

Amitesh Publication & Company,
TCG's, SAI DATTA NIWAS, S. No. 5+4/ 5+4, D-WING, Flat No. 104, Dattnagar, Near Telco Colony, Ambegaon (Kh), Pune. Maharashtra. 411046. India.
Website: www.srjis.com **Email:** srjisarticles16@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

झारखण्ड के वीर सेनानी बुधु भगत

स्मिता तिग्गा
सहायक प्रोफेसर,
संत जेवियर, महाविद्यालय, महुआडांड़, लातेहार
Email- smitatigga26@gmail.com

झारखण्ड के इतिहास में वैसे अनेक वीरों का उल्लेख मिलता है, जिनकी वीरता जिनके स्थान और बलिदान की कहानी अत्यंत रोमांचकारी है और भविष्य की पीढियों के लिए पथ प्रदर्शक का काम करती है। इन पंक्तियों में वैसे ही एक महान आत्मा को इतिहास–विस्तृत अँधेरा से प्रकाश में लाने की चेष्टा की गयी है। "झारखण्ड के वे महान सपूत है, कोल–विद्रोह के नायक अमर शहीद, वीर बुधु भगत। उन्होंने अंग्रेजी सेना के खिलाफ लोमहर्षक युद्ध करके न केवल वीरगति ही पायी, बल्कि अपने राष्ट, अपने समाज और अपनी जाति का नाम भी ऊँचा किया। पूरे कोल–विद्रोह के दमन कार्य में सिलागाई के बुधु भगत का सामना करने में अंग्रेजी सेना के सेनानायकों तथा अन्य लोगों को बड़ी कठिनाई हुई थी। इसकी चर्चा 'बंगाल हरकारा' (बंगाल की एक प्रख्यात पत्रिका) में अनेक बार की गई है।"[1] "बुधु भगत का जन्म आज के झारखण्ड राज्य के राँची जिले में सिलागाई नामक ग्राम में 17 फरवरी सन 1792 ई० को हुआ था कहा जाता है, कि उन्हें दैवीय शक्तियाँ प्राप्त थी जिसके प्रतीकस्वरूप वे एक कुल्हाड़ी सदा अपने साथ रखते थे।"[2] "आम तौर पर 1857 को ही स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम समर माना जाता है लेकिन इससे पूर्व ही वीर बुधु भगत ने ना सिर्फ क्रांति का शंखनाद किया था, बल्कि अपने साहस वा नेतृत्व क्षमता से 1832 ई० में लरका विद्रोह नामक ऐतिहासिक आन्दोलन का सूत्रपात भी किया।"[3] "छोटानागपुर के आदिवासी इलाको में अंग्रेज हुकूमत के दौरान बर्बरता चरम पर थी। मुंडाओं ने जमीदारों, साहूकारों के विरूद्ध पहले से ही भीषण विद्रोह छेड़ रखा था। उरांवों ने बागी तेवर अपना लिए। बुधु भगत बचपन से ही जमीदारों और अंग्रेजी सेना की क्रुरता देखते आए थे। उन्होंने देखा था की किस तरह तैयार फसल जमीदार जबरजस्ती उठा ले जाते थे। गरीब गाँव वालों के घर कई–कई दिनों तक चूल्हा नहीं जल पाता था बालक बुधु भगत सिलागाई की कोयल नदी के किनारे घंटो बैठकर अंग्रेजों और जमीदारों को भागने के बारे में सोचते रहते थे।" [4] बचपन से ही वह एकांत प्रिय और चिन्तक सौभाव का था। गाँव के अन्य बालकों से भिन्न वा नित्य अकेले कोयल नदी के किनारे स्थित एक पत्थर पर स्नान करने के बाद बैठा करते थे। वह तीर चलाने में अत्यंत कुशल थे। कभी–कभी ऐसा लगता था कि वह बैठे–बैठे किसी दूसरी दूनिया में विचरण कर रहे हो। "गाँव वालों के अनुसार बुधु भगत में दैवीय शक्तियों का अभिभव हो गया है। वे जनाव धारण करने लगे जिस कारण उन्हें चोरेया के जमीदार परिवार के भुनु सिंह के साथ मतभेद हो गया इसके बाद से बुधु भगत काफी उग्र हो गए। एक दिन स्नान करने के पश्चात घर ना लौटकर बुधु भगत ने तीर–धनुष उठाया और बड़का टोंगरी की ओर चल पड़ा। निकट पहुंचकर टोंगरी को लक्ष्य कर तीर चला दिया। तीर टोंगरी में धस गया और वहाँ से जल की धार फूट पड़ी। बुधु भगत की ख्याति के लिए यह घटना प्रयाप्त थी। पास–पड़ोस के गांवों में यह बात फैल गई कि बुधु भगत में देवी शक्ति है। वह ना केवल तीर चलाना अपितु तलवार चलाने में भी अद्वितीय था। ज्यों–ज्यों समय बीतता गया भगत के समर्थकों की संख्या बढ़ती गई। कोल विद्रोह तक यह संख्या हजारों में पहुँच चुकी थी।"[5]

"यह विद्रोह तीन चरणों में विकसित हुआ था **प्रथम चरण** घाटी के मुंडाओं का क्षेत्र था जब ठेकेदारों जमीदारों से उत्पीड़ित मुंडाओं ने बदले की भावना से अपने हथयार उठा लिए थे। जब यह विद्रोह मुंडाओं की घाटी पारकर उरांव के क्षेत्र में पहुंचा तो इसकी उग्रता कम हो गई और यह स्थिर

Scanned with OKEN Scanner

रूप से फैलने लगा था उरांवों के साथ–साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्रोह को कुछ हस्तियों का सहयोग मिलने लगा था ब्लंट, रसेल एवं डेण्ट जैसे अधिकारी जो इस क्षेत्र से कभी जुड़े हुए थे का पुरा विश्वास था कि इस विद्रोह के मूल में नागपुर के महाराजा जगरनाथ शाही है। उन्होंने सिंगराय मानकी का बयान भी उद्ग्रीत किया।"[6] वस्तुतः तनावपूर्ण थे और "जब फुट पड़ा था तो सभी अंग्रेज विरोधी लाभ उठाना चाहते थे। इसी प्रकार लेसलीगंज के सरकारी कर्मचारी गौरी चरण और आलम चन्द्र ने अपने स्तर से विद्रोहियों की भरपूर सहायता की थी। तात्पर्य यह कि मध्य भाग में विद्रोह अंग्रेजी सरकार को उखाड़ फेकने का एक प्रयास हो गया था। गवर्नर जनरल परिषद् के उपाध्यक्ष चार्ल्स मेटकाफ ने इस सत्य को स्वीकारा था।"[7] **दूसरा चरण** डाल्टनगंज एवं निकटवर्ती चुकि मध्य भाग में विद्रोह समस्त अंग्रेजी शासन को समाप्त करने के एक प्रयास के रूप में देखा गया था अतः **तीसरे चरण** जहाँ जनजातीय विद्रोह ने स्वतंत्रता संग्राम का रूप धारण कर लिया था। इस विद्रोह को नियंत्रित करने के लिए सेना का सहयोग लेना पड़ा था। बुधु भगत सैनिक कार्यवाही से अवगत थे। अतः उसने अपने आदमियों को तदानुसार गौरिला विधि से प्रशिक्षित किया था।

"कोल विद्रोह उस समय उग्र हो गया जय छोटानागपुर के नागवंसी राजा के भाई हरनाथ शाही ने अपनी जमीदारी के कुछ गाँव की खेती की जमीन पुस्त–दर–पुस्त खेती करने वाले आदिवासियों से छीनकर अपने प्रिय पात्र कुछ मुसलमानों, सिखों आदि को सौप दी। सिंहभूम की सीमा के पास ईचागुटु परगना के मानकी सिंगराय के बारह गाँव छिनकर सिखों को दे दिए गए। इन सिखों ने ना केवल भूमि छीनी बल्कि सिंगराय मानकी की दो बहनों को भी ले गए। उसी प्रकार बड़गांव के सुर्गा मुंडा की जमीन की बंदोबस्ती जाफर अली को दी गई जिसने सुर्गा मुंडा की पत्नी को भी उठा लिया। ऐसी घटनाएँ क्रांति के लिए तत्कालीन कारण बनी।"[8] मानकी सिंगराय एवं सुर्गा मुंडा ने सोनाहातु, तमाड़ और बडेगाँव अंचल के सभी मानकी मुंडाओं की सभा 11 दिसंबर 1831 के दिन तमाड़ के लंका नामन स्थान पर बुलाई। जनवरी 1832 तक युद्ध के तीन प्रदेश के सभी भूभाग में घुमाएँ गए।

'शीघ्र राँची और सिंहभूम के सभी मुंडा मानकी इस विद्रोह में सम्मिलित हो गए सिंहभूम के 'हो' भी इस क्रांति में सहभागी बने। क्रांति हजारीबाग, मानभूम, टोरी तक फैल गई।"[9] राँची के "चुटिया क्षेत्र में विद्रोही अत्यंत सक्रिय हो चुके थे। इस क्षेत्र में उनकी घनी आवादी थी सिल्ली गाँव का बुधु भगत उन्हें कुशल नेतृत्वा प्रदान कर रहा था। सरकार को उम्मीद थी कि उसके मारे जाने अथवा पकड़े जाने मात्र से उस क्षेत्र में विद्रोह समाप्त हो सकता था।" [10]पुनः विद्रोही इस इलाके से पूरी तरह परिचित थे। यह क्षेत्र छापामार युद्ध के लिए सर्वथा उपयुक्त था। दूसरी ओर कंपनी के अफसरों के पास ना पर्याप्त नक्शे थे और ना जंगलों तथा घाटियों की समुचित जानकारी। उन्हें यहाँ की भौगोलिक स्थिति की उतनी ही कम जानकारी थी कि उन्हें अनेक बार पता ही नहीं चलता था कि वे किधर जा रहे थे। आवश्यक जानकारी के अभाव में फ़ौज एक ही जगह आवश्यक रूप से कभी आगे बढती थी तो कभी पीछे हटती थी। परिणाम होता था कि जब विद्रोहियों से मुकाबला होता भी था तो उन्हें प्रभावी ढंग से घेरा नहीं जा सकता था फिर भी फौज आती ही रही। बुधु भगत ने सिल्ली, दिक्कू, टोरी, चोरिया, पिठोरिया, लोहरदगा, पलामु में संगठन का कार्य किया। "बुधु भगत एक कुशल संगठन कर्ता थे, अंग्रेज सरकार किसी भी तरह से उन्हें पकड़ना चाहती थी लेकिन बुधु भगत की दैवी शक्ति की चर्चा सुनकर घबराती थी। 8 फरवरी 1832 को नेटिव इफेन्ट्री के कमांडिग अफसर ने बुधु भगत से तंग आकर उन्हें जिन्दा या मुर्दा पकड़ने पर 1000 रुपया इनाम देने की घोषणा की। वे झारखण्ड के पहले आन्दोलनकारी थे। जिनके लिए इतनी बड़ी रकम की घोषणा हुई थी। गाँव वालों में से कोई भी बुधु भगत को पकड़वाना नहीं चाहते थे। इसके उपरांत कप्तान इम्पे के नेतृत्वा में बनारस से 50 वी० एन० आई० की 6 कम्पनियाँ आयी। तीसरी लाईट कैवेलरी का एक दल भी टिकू पहुंचा। 11 फरवरी को 54 वी एन० आई० को दो कंपनियों की अलग तोपों का एक बिग्रेड भी आ गया। 9 फरवरी को 34 वी० एन० आई० के कर्नल बोतेन को कहा गया ककि वह बरकपुर से बांकुड़ा ना जाकर तमाड, बुंडू तथा जंगल महाल से लगे छोटानागपुर–खास के अन्य परगनों की ओर चला जाए। कुमक की सहायता से उत्तरी तथा मध्यवर्ती परगनों में शांति बहाल करना तो संभव हो गया, लेकिन छोटानागपुर–खास प्रभाव नहीं पड़ा। सेना की कमी के कारण सर्वत्र निराशा फैल गई थी। किन्तु कप्तान इम्पे द्वारा टिकू के

Scanned with OKEN Scanner

निकट बुरी तरह पराजित होने पर 10 फरवरी को 4000 विद्रोहियों ने हथियार डाल दिए। उनसे कहा गया था की ऐसा करने पर उनपर दया की जाएगी।" [11]किन्तु "10 तारीख को बंदी बनाये गए प्रायः सभी विद्रोही चुटिया जाते हुए मुक्त हो गए। एक भारी ओलावृष्टि के कारण बंदियों को ले जाती हुई तीसरी घुड़सवार सेना स्वंय बिखर गयी और मौके का लाभ उठा कर बंदी भाग निकले।" [12]लेकिन "13 तारीख को इस नुकसान की क्षतिपूर्ति सिली गाँव के बुधु भगत के विरुद्ध मिली सफलता से हो गई। इम्पे ने सिपाहियों की चार कंपनियों और अपने घुड़सवारों के साथ गाँव को घेरकर उसपर गोलियों से हमला किया। गोलियों की बौछार में भी ये चट्टान की तरह अडे रहे। भगत का परिवार तथा उसके अनुयायी वृद्ध नेता के कारण चतुर्दिक दुर्भेद्य दीवार की तरह खड़े हुए लेकिन बन्दुक का मुकाबला तीर–धनुष से तथा सैनिकों की तलवार का सामना कुल्हाड़ी से नहीं किया जा सकता था।" [13]विल्सन, मिल्स हिस्ट्री ऑफ इंडिया, खण्ड 3, पृष्ट 337 पर वीर बुधु भगत की सहादत का उल्लेख है। राँची के सिलागाँव को 50वी० देशी पलटन के एक दस्ते और तीसरे रिसाले की एक टुकड़ी ने आ घेरा। बुधु भगत के साथ गाँव के उसांव योद्धा अंग्रेज सैनिकों से भिड़ गए। इस युद्ध में भगत, उनके बेटे–भतीजे और 150 अनुयायी के साथ 13 फरवरी 1832 को मारे गए। "29 फरवरी 1832 के "बंगाल हरकारा" नामक पत्रिका में यह लिखा मिलता है कि कैप्टन इम्पे ने अपनी सफलता का प्रदर्शन एवं आदिवासियों में भय उत्पन करने के लिए बुधु भगत, उनके छोटे भाई और भतीजे के कटे हुए सिर ट्रे में सजाकर पिठोरिया स्थित एक शिविर में कमिश्नर को भेट दिया था। कहा जाता है अंग्रेजी शासन में स्वतंत्रता की लडाई में शहीद होने वाले ये पहले क्रांतिकारी थे।" [14]"बुधु भगत की मौत से सरकार को स्पष्ट लाभ हुआ। कई आदिवासी गाँव के मुंडा–मानकियों ने आकर सयुंक्त आयुक्तों के समक्ष समर्पण किया। बंगाल हरकारा के अनुसार चुटिया से 30 किलोमीटर के दायरे में प्रायः सभी बागियों ने आत्म समर्पण कर दिया।" [15]

इस प्रकार 1831–32 का जनजातीय विद्रोह वस्तुतः आदिवासियों का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था और बुधु भगत इस संग्राम के प्रथम शहीद थे। साथ ही झारखण्ड के पहले आन्दोलन–कारी जिसके लिए 1000 रुपया का इनाम रखा गया था। इनकी वीरता को इतिहास में संजोया गया, आज वे मरकर भी अमर है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अनुज मुनेश्वर,"झारखण्ड के शहीद" भुवन प्रकाशन राँची, 2001, पृष्ट – 17
2. Bharat Discovery.org, झारखण्ड के विभूति (हिंदी) संवाद, अभिगमन तिथि 28 मई 2015
3. स्वतंत्रता संग्राम का एक और महत्वपूर्ण पक्ष जनजातीय नेतृत्व ने दी थी ब्रिटिश सरकार को चुनौती (हिंदी) पचजन्या कॉम। अभिगमन तिथि 28 मई 2015
4. Bharat Discovery.org, कोयल किनारे बुधु भगत की बगावत (हिंदी) दिवा स्वपन। अभिगमन तिथि 28 मई 2015
5. मिज दिवाकर "शहीदों का झारखण्ड" कल्पाज पब्लिकेशन, दिल्ली, 2019, पृष्ट – 54–55
6. Ressel To Braddon, 18th April 1832, Enclosure Singrai Manki, Chotanagpur 1831,1832 Patna 1987 Page & 158 F-N
7. मिज दिवाकर, पृष्ट – 55
8. पाल रणेद्र सुधीर, झारखण्ड इन्साइकलोपीडिया हुलगुलानों की प्रतिध्वनियाँ – वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2008 पृष्ट – 45
9. विल्सन, मिल्स, हिस्ट्री ऑफ इंडिया, खण्ड 3 पृष्ट 335 बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, सिंहभूम सरायकेला एंड खरसावाँ पृष्ट – 36
10. बंगाल जु० (क्रि०) 14 फरवरी 1832 न० 26 संयुक्त आयुक्त 30 वी० एन० आई० के कप्तान को 8 फरवरी 1832
11. बंगाल हरकारा 25 फरवरी 1832 .
12. जु० (क्रि०) प्रो० 21 फरवरी 1832 न० 9 कप्तान इम्पे संयुक्त आयुक्तों को 12 फरवरी
13. वी० वीरोत्तम, झारखण्ड: इतिहास एवं संस्कृति बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 2001, पृष्ट– 228
14. तिपारी कुमार सम: "झारखण्ड की रुपरेखा, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 2019 पृष्ट– 233
15. बंगाल हरकारा, 21 फरवरी, 1832

Scanned with OKEN Scanner